हरिकेश गौतम की कविता

क्या गुनाह था मेरा

प्रेम में संलिप्त युगल से
होकर गुजरती हवा ने
मानो,
साँझ और सूरज को
ठहरने के लिए
कह दिया हो
प्रेम के प्रभाव से
धरती की बयार
अब शीतल होने लगी थी।

प्रेमपाश में बैठा यह युगल
संसार की झंझटों से मुक्त
प्रेम की पराकाष्ठा में
आकंठ डूबा था
अचानक
शांत-सुनहरे बादल
गरजने लगे
शीतल हवा
गर्म आग उगलने लगी
प्रेममय वह जगह
ऐसा लगा कि
अपराध का अड्डा बन गई
जो अभी-अभी प्रेम में डूबी थी।

भीड़ ने चारों तरफ से घेर लिया
फुसफुसाहट में बात होने लगी
अब तो इसको
सब ने देख लिया है
अब इसको सजा मिलेगी
अब यह मारा जाएगा।

अचानक
एक आदमी भीड़ में प्रवेश करता है
फरमान जारी कर देता है.....
कुचल दो इस नीच को
कुचल दो इसके तन और मन को
ताकि
दुबारा हिम्मत न करे
अपनी जाति और औकात भूलने की
परंपरा और संस्कार तोड़ने की।

बेरहम भीड़
उनकी निर्मम हत्या कर देती है
लेकिन
प्रेम में कुचली गई शरीर भले ही
बेजान लाश में बदल गई हो
वह आज भी
उस भीड़ से पूछ रही है
आखिर
क्या गुनाह था मेरा?
यही न
मैंने प्रेम कर लिया था
तुम्हारी बनाई गई
जाति को दरकिनार कर
अन्तर्जातीय लड़की से
बताओ....
बताओ.... स्व